REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 13 | ISSUE - 5 | FEBRUARY - 2024

हिसार जिले में समाचार पत्रों में कार्य करने वाले पत्रकारों की कार्य संतुष्टि पर एक अध्ययन।

डॉ. रमेश कुमार
सहायक प्रोफेसर, दयानन्द महाविधालय, हिसार।

सार–

पत्रकारिता एक अत्यधिक प्रतिस्पर्धी क्षेत्र है जहां पत्रकार समाचार एकत्र करने, संपाधित करने और वितरित करने में कई चुनौतियों का सामना करते हैं। पत्रकारिता में देर रात की शिफ्ट, रिपोर्टिंग और अक्सर जोखिम भरी परिस्थितियां आदि शामिल हैं। वर्तमान अध्ययन बदलते आधुनिक समाज में पत्रकारों के विकास से संबंधित एक अनुभवजन्य शोध है। यह अध्ययन हिसार शहर में कार्यरत पत्रकारों के बीच नौकरी की संतुष्टि पर केंद्रित है। वर्तमान अध्ययन समाज में आधुनिक मीडिया के क्षेत्र में उनकी नौकरी की संतुष्टि के बारे में 60 पत्रकारों की राय का विश्लेषण करने का प्रयास करता है। प्राथमिक आंकड़ों के साथ प्रासंगिक माध्यमिक आंकड़े जैसे कि पत्रिकाएं, लेख, किताबें, समाचार पत्र और इंटरनेट स्रोत शामिल हैं। प्रतिदर्श का चयन सरल यादृच्छिक विधि पर आधारित है। वर्तमान अध्ययन के निष्कर्ष मुख्य रूप से हिसार शहर में एक साक्षात्कार कार्यक्रम की शुरूआत के माध्यम से एकत्र किए गए प्रासंगिक आंकड़ो पर आधारित हैं। अध्ययन को इस प्रकार डिजाइन किया गया था कि उत्तरदाताओं से प्रासंगिक आंकड़े एकत्र किया जा सके। इसकी वैधता और विश्वसनीयता बढ़ाने के लिए शोध का पायलट अध्ययन में पूर्व परीक्षण किया गया है।

कूंजी शब्द– नौकरी से संतुष्टि, पत्रकार, मीडिया और कार्यस्थल।

परिचय–

पत्रकारिता की एक विशिष्ट संस्कृति है जिसमें मानदंडों, परंपराओं और उन लोगों से व्यवहार की अपेक्षाएं हैं जो संस्कृति का हिस्सा हैं। उनमें से कई उम्मीदें पेशे के सार्वजनिक सेवा पहलुओं से प्रेरित हैं। पत्रकारों के बीच यह भावना कि वे जनता की भलाई के लिए काम कर रहे हैं, न कि केवल अपने निजी लाभ के लिए। आज भारत में जनसंचार के अनेक माध्यम मौजूद है जिनमें प्रमुख रूप से समाचारपत्र, पत्रिकाएं, पुस्तकें, रेडियो, टेलीविजन, केबल टी.वी., इंटरनेट आदि प्रमुख हैं। मुख्य रूप से हम इन्हें दो भागों में बांट सकते हैं। एक मुद्रित माध्यम और दूसरा इलैक्ट्रॉनिक माध्यम। मुद्रित माध्यमों का इतिहास 500 वर्षों से अधिक पुराना है। जबकि इलैक्टॉनिक माध्यम 20वीं सदी की देन हैं। सन् 1450 में जर्मन के गुटेनबर्ग ने आधुनिक मुद्रण का अविष्कार किया। सबसे पहले बाइबिल के कुछ अंश छापे गए। सन् 1556 में पुर्तगाली इस कला को भारत के गोवा में लाए। अपने साथ लाए हुए टाइप व मशीन के द्वारा उन्होनें छपाई का काम शुरू किया। सन् 1561 में गोवा में छपी एक पुस्तक की प्रति आज भी न्यूयार्क लाइब्रेरी में सुरक्षित है। अग्रेज जब भारत आए तो छपाई

का काम पुर्तगालियों के हाथ से ले लिया और देशी भाषाओं के शिक्षण के लिए उसका उपयोग किया। तत्कालीन गवर्नर वारेन हेस्टिंग्स ने बांग्ला और देवनागरी के टाइप तैयार करवाए। इस प्रकार देशी भाषाओं में छपाई की नींव पड़ी। सन् 1805 में देवनागरी लिपि के टाइप तैयार किए गए और धार्मिक साहित्य, शिक्षा सामग्री और समाचारपत्र छपाई को गति प्रदान हुई। सन् 1920 में रेडियो के प्रादुर्भाव ने समाचारपत्रों को समाज में सूचना के प्रमुख वाहक की अपनी भूमिका पर गंभीरता से पुनर्विचार करने के लिए विवश कर दिया था। इस चुनौती का सामना करने के लिए अखबारों ने अपने रूप–रंग और सामग्री में परिवर्तन लाते हुए स्वयं को अधिक पठनीय, ज्यादा विचारपूर्ण और ज्यादा खोजपूर्ण सामग्री के साथ प्रस्तुत किया। समाचारपत्र अभी इस चुनौती से निपट ही पाए थे कि उससे भी ज्यादा ताकतवर और प्रभावी माध्यम के रूप में टेलीविजन ने और भी गंभीर चुनौती प्रस्तुत कर दी। सन् 1940 से 1990 के बीच अकेले अमेरिका में प्रति 2 व्यक्ति के मध्य एक समाचारपत्र का औसत घटकर प्रति 3 व्यक्ति के मध्य एक पत्र रह गया। अब फिर एक नई चुनौती मुद्रित माध्यम के समक्ष आ खडी हुई है। यह चुनौती इंटरनेट ने पेश की है। इससे पहले कभी भी सूचनाओं का ऐसा महासागर एक साथ इतने लोगों को उपलब्ध नहीं था। फिर भी यह मानना गलत होगा कि इंटरनेट ने समाचारपत्रों की प्रसंगिकता समाप्त कर दी है। अपनी लोकप्रियता, आसान पहुंच, सशक्त रिर्पोटिंग और घटनाओं का सामयिक तथा सटीक विश्लेषण के कारण आज भी समाचारपत्र व्यक्ति के जीवन को बहुत गहराई से प्रभावित करने में सक्षम हैं। एक अनुमान के अनुसार प्रतिदिन लगभग एक अरब व्यक्ति कम से कम एक समाचारपत्र अवश्य पढते हैं। आज जनसंचार के आधुनिकतम् माध्यम उपलब्ध हैं। सूचना का संकलन, प्रस्तुतीकरण एवं वितरण के तरीके पूरी तरह से बदल चुके हैं। मुद्रित माध्यमों ने इंटरनेट की मदद से कार्यक्षमता और गुणवत्ता में अभूतपूर्व सुधार किया है।

साहित्य अवलोकन

गुप्ता और निशा (1978) ने माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के बीच नौकरी की संतुष्टि को प्रभावित करने वाले व्यक्तिगत कारकों का पता लगाने के लिए एक अध्ययन किया। आंकड़ों के विश्लेषण से पता चला कि नौकरी से संतुष्टि कई परस्पर संबंधित कारकों से प्राप्त होती थी और उनके कारण होती थी। उम्र और नौकरी की संतुष्टि के बीच सबसे अधिक सहसंबंध पाया गया। उन्होंने कार्य संतुष्टि और कार्य भूमिका चर और व्यक्तित्व कारकों के बीच संबंध पाया। यह पाया गया कि भारत के पूर्वी राज्यों के विभिन्न स्कूलों में कार्यरत पचास प्रतिशत शिक्षक अपनी नौकरी से संतुष्ट थे। **चौसी और भगत (1980)** ने संगठन के प्रति प्रतिबद्धता, समग्र नौकरी संतुष्टि, नौकरी के विशिष्ट पहलुओं से संतुष्टि और व्यक्तिगत जीवन संतुष्टि के संदर्भ में महिलाओं द्वारा अनुभव किए गए भूमिका तनाव के विभेदक प्रभावों का अध्ययन किया है। भूमिका का तनाव संगठनात्मक प्रतिबद्धता से महत्वपूर्ण और नकारात्मक रूप से संबंधित था जिसमें समग्र कार्य संतुष्टि वेतन, कार्य, सहकर्मियों और पर्यवेक्षण से संतुष्टि और व्यक्तिगत जीवन की संतुष्टि शामिल है। **कक्कड़ (1983)** ने महिलाओं के दृष्टिकोण, नौकरी के मूल्यों और व्यावसायिक हितों के संबंध में नौकरी की संतुष्टि पर एक शोध परियोजना शुरू की। अध्ययन में प्रारंभिक व्यावसायिक प्रशिक्षण के बाद काम की दुनिया में प्रवेश करने वाली महिला कर्मचारियों की नौकरी की संतुष्टि पर व्यावसायिक दृष्टिकोण, रुचियों और कार्य मूल्यों के प्रभाव की जांच की गई। अध्ययन के चर थे सामाजिक–आर्थिक स्थिति, वैवाहिक स्थिति और उम्र, स्वतंत्र चर के रूप में कार्य मूल्य और आश्रित चर के रूप में नौकरी की संतुष्टि। अध्ययन में नौकरी से संतुष्टि और व्यवसाय स्तर, नौकरी से संतुष्टि और उम्र, शैक्षिक स्तर, आय, व्यावसायिक दृष्टिकोण और कार्य मूल्यों के बीच सकारात्मक संबंध भी सामने आए। **ग्रे (1984)** ऑस्ट्रेलियाई नर्सों के एक नमूने के बीच नौकरी से संतुष्टि की जांच करता है। नौकरी से संतुष्टि को श्रम के चिकित्सा प्रभाग में नर्सिंग की स्थिति और व्यवसाय द्वारा अपनी स्थिति में सुधार के लिए अपनाई गई विभिन्न राजनीतिक रणनीतियों के संदर्भ में माना जाता है। डेटा की जांच से पता चलता है कि वरिष्ठता, रैंक, लिंग और बुनियादी प्रशिक्षण के प्रकार का नौकरी की संतुष्टि पर सबसे मजबूत प्रभाव पड़ता है। नौकरी प्रौद्योगिकी और नौकरी प्रौद्योगिकी, शिक्षा और बुनियादी प्रशिक्षण के बाद की बातचीत भी महत्वपूर्ण है। व्यवसाय की स्थिति और नर्सिंग कार्य की संतुष्टि में सुधार के लिए नर्सिंग के लिए राजनीतिक रणनीतियों के संदर्भ में इन निष्कर्षों के निहितार्थों पर चर्चा की गई है। **स्मार्ट जॉन और एथिंगटन (1987)** ने कॉलेज की नवागंतुक महिलाओं का अध्ययन किया है और सार्वजनिक और निजी संगठनों में कार्यरत महिला कॉलेज स्नातकों की

नौकरी की संतुष्टि पर व्यावसायिक लिंग अलगाव के प्रभाव में व्यापक भिन्नता का संकेत दिया है। सार्वजनिक क्षेत्र में लिंग–संतुलित और पुरुष और महिला प्रधान व्यवसायों में कार्यरत महिलाओं में नौकरी से संतुष्टि का स्तर तुलनीय है। हालाँकि, निजी कंपनियों में लिंग–संतुलित करियर में कार्यरत उत्तरदाता महिला प्रधान व्यवसायों में कार्यरत लोगों की तुलना में अपनी नौकरी की आंतरिक और समग्र प्रकृति से अधिक संतुष्ट हैं, और महिला प्रधान नौकरियों में कार्यरत लोग अपने करियर की बाहरी प्रकृति से अधिक संतुष्ट हैं। जो पुरुष प्रधान नौकरियों में हैं।

शोध उदेश्य–

1. पत्रकारों का कार्य के अनुसार वैतन की संतुष्टि का पता लगाना।
2. पत्रकारों की नोकरी के दौरान आनेवाली बाधाओं का अध्ययन करना।
3. पत्रकारों पर समाचारों के छूटने के दबाव को जानना।

शोध विधि–

प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण शोध पद्धति का प्रयोग किया गया है। अध्ययन में पत्रकारों की नोकरी और संतुष्टि को प्रभावित करने वाले कारकों का परिणाम जानने के लिए हरियाणा के हिसार जिले को चुना गया। सिम्पल रेण्डम सैंपलिंग तकनीक द्वारा हिसार जिले में समाचार पत्रों में कार्य करने वाले 60 पत्रकारों का चयन किया गया। चुने गए पत्रकारों से साक्षात्कार तकनीक द्वारा आंकडों का संकलन किया गया।

आंकडो का प्रस्तुतिकरण

क्या आप अपने वैतन से संतुष्ट है?

कम संख्या	वैतन से संतुष्ट	संख्या	प्रतिशत
1	हॉ	48	80
2	नही	12	20
	कुल	60	100

उपरोक्त तालिका में पत्रकारों के वैतन से संतुष्ट के आकडों को दर्शाया गया है। 80 प्रतिशत पत्रकार अपने वैतन से संतुष्ट है। 20 प्रतिशत पत्रकार अपने वैतन से संतुष्ट नहीं है। उपरोक्त आंकडों से यह निष्कर्ष निकलता है की सबसे ज्यादा प्रतिशत पत्रकार अपने वैतन से संतुष्ट है एवं सबसे कम प्रतिशत पत्रकार अपने वैतन से संतुष्ट नहीं है।

आप अपनी नौकरी के दौरान किस प्रकार की बाधाओं का सामना करते है?

कम संख्या	बाधाओं का सामना	संख्या	प्रतिशत
1	समाचार संगठन का दबाव	43	71.66
2	सामाजिक दबाव	00	00
3	राजनेतिक दबाव	15	25
4	आर्थिक दबाव	02	3.34
5	अन्य	00	00
	कुल	60	100

उपरोक्त तालिका में पत्रकारों के नौकरी के दौरान आने वाली बाधाओं के आकडों को दर्शाया गया है। 71.66 प्रतिशत पत्रकारों का कहना है की नौकरी के दौरान समाचार संगठन का दबाव रहता है। पत्रकारों पर सामाजिक दबाव का प्रतिशत शुन्य है। 25 प्रतिशत पत्रकारों का कहना है की उन पर नौकरी के दौरान राजनेतिक दबाव रहता है। 3.34 प्रतिशत पत्रकारों का यह कहना है की नौकरी के दौरान उन्हे आर्थिक दबाव का सामना करना पडता है। पत्रकारों पर अन्य प्रकार के दबावों का प्रतिशत शुन्य है। उपरोक्त तालिका के

आंकडों से यह निष्कर्ष निकलता है की सबसे ज्यादा प्रतिशत पत्रकारों पर समाचार संगठन का दबाव रहता है एवं सबसे कम प्रतिशत पत्रकारों पर नोकरी के दौरान आर्थिक दबाव रहता है।

क्या समाचार पत्र छपने के बाद पत्रकारों को समिक्षा के दौरान समाचार छूटने पर दबाव महसूस होता है?

कम संख्या	दबाव महसूस	संख्या	प्रतिशत
1	अधिक	48	80
2	बहुत अधिक	04	6.66
3	कम	08	13.34
4	बहुत कम	00	00
5	बिल्कुल भी नहीं	00	00
	कुल	60	100

उपरोक्त तालिका में समाचार पत्र छपने के बाद पत्रकारों को समिक्षा के दौरान समाचार छूटने पर दबाव के आकडों को दर्शाया गया है। 80 प्रतिशत पत्रकारों का यह मानना है की उन्हे समाचार पत्र छपने के बाद समिक्षा के दौरान समाचार छूटने पर दबाव अधिक महसूस होता है। 6.66 प्रतिशत पत्रकारों का यह कहना है की उन्हे समाचार पत्र छपने के बाद समिक्षा के दौरान समाचार छूटने पर दबाव बहुत अधिक महसूस होता है। 13.34 प्रतिशत पत्रकारों का यह कहना है की उन्हे समाचार पत्र छपने के बाद समिक्षा के दौरान समाचार छूटने पर दबाव कम महसूस होता है। शुन्य प्रतिशत पत्रकारों का यह कहना है की उन्हे समाचार पत्र छपने के बाद समिक्षा के दौरान समाचार छूटने पर दबाव बहुत कम महसूस होता है। शुन्य प्रतिशत पत्रकारों का यह कहना है की उन्हे समाचार पत्र छपने के बाद समिक्षा के दौरान समाचार छूटने पर दबाव बिल्कुल भी महसूस नहीं होता है।

क्या आपको लगता है की उच्च प्रबन्धकों द्वारा सहयोग देकर एक पत्रकार की कार्य संतुष्टि को अच्छा किया जा सकता है

कम संख्या	उच्च प्रबन्धकों द्वारा सहयोग	संख्या	प्रतिशत
1	हॉ	43	71.66
2	न्ही	4	6.66
3	कह नहीं सकते	13	21.68
	कुल	60	100

उपरोक्त तालिका में पत्रकारों के उच्च प्रबन्धकों द्वारा सहयोग के आकडों को दर्शाया गया है। 71.66 प्रतिशत पत्रकार यह मानते है की उच्च प्रबन्धकों द्वारा सहयोग देकर एक पत्रकार की कार्य संतुष्टि को अच्छा किया जा सकता है। 6.66 प्रतिशत पत्रकार यह मानते है की उच्च प्रबन्धकों द्वारा सहयोग देकर एक पत्रकार की कार्य संतुष्टि को अच्छा नही किया जा सकता है। 21.68 प्रतिशत पत्रकारों का इस विषय पर कोई जवाब नहीं है। उपरोक्त आंकडों से यह निष्कर्ष निकलता है की सबसे ज्यादा प्रतिशत पत्रकारों का यह मानना है की उच्च प्रबन्धकों द्वारा सहयोग देकर एक पत्रकार की कार्य संतुष्टि को अच्छा किया जा सकता है एवं सबसे कम प्रतिशत पत्रकार यह मानते है की उच्च प्रबन्धकों द्वारा सहयोग देकर एक पत्रकार की कार्य संतुष्टि को अच्छा नहीं किया जा सकता है।

क्या आपको लगता है की पत्रकारों को उच्च प्रशिक्षण देकर एक पत्रकार की कार्य संतुष्टि को अच्छा किया जा सकता है

क्रम संख्या	प्रशिक्षण	संख्या	प्रतिशत
1	हॉ	14	23.33
2	नही	20	33.33
3	कह नहीं सकते	26	43.34
	कुल	60	100

उपरोक्त तालिका में पत्रकारों के उच्च प्रशिक्षण के आकडों को दर्शाया गया है। 23.33 प्रतिशत पत्रकार यह मानते है की पत्रकारों को उच्च प्रशिक्षण देकर एक पत्रकार की कार्य संतुष्टि को अच्छा किया जा सकता है। 33.33 प्रतिशत पत्रकार यह मानते है की पत्रकारों को उच्च प्रशिक्षण देकर एक पत्रकार की कार्य संतुष्टि को अच्छा नही किया जा सकता है। 43.34 प्रतिशत पत्रकारों का इस विषय पर कोई जवाब नहीं है। उपरोक्त आंकडों से यह निष्कर्ष निकलता है की सबसे ज्यादा प्रतिशत पत्रकारों का यह मानना है की प्रतिशत पत्रकार यह मानते है पत्रकारों को उच्च प्रशिक्षण देकर एक पत्रकार की कार्य संतुष्टि को अच्छा नही किया जा सकता है एवं सबसे कम प्रतिशत पत्रकार यह मानते है की पत्रकारों को उच्च प्रशिक्षण देकर एक पत्रकार की कार्य संतुष्टि को अच्छा किया जा सकता है।

क्या आपको लगता है की आपके कार्य स्थान को बदलकर एक पत्रकार की कार्य संतुष्टि को अच्छा किया जा सकता है

क्रम संख्या	कार्य स्थान को बदलकर	संख्या	प्रतिशत
1	हॉ	35	58.33
2	नही	8	13.33
3	कह नहीं सकते	17	28.34
	कुल	60	100

उपरोक्त तालिका में पत्रकारों के कार्य स्थान को बदलकर के आकडों को दर्शाया गया है। 58.33 प्रतिशत पत्रकार यह मानते है की कार्य स्थान को बदलकर एक पत्रकार की कार्य संतुष्टि को अच्छा किया जा सकता है। 13.33 प्रतिशत पत्रकार यह मानते है की कार्य स्थान को बदलकर एक पत्रकार की कार्य संतुष्टि को अच्छा नहीं किया जा सकता है। 28.34 प्रतिशत पत्रकारों का इस विषय पर कोई जवाब नहीं है। उपरोक्त आंकडों से यह निष्कर्ष निकलता है की सबसे ज्यादा प्रतिशत पत्रकारों का यह मानना है की कार्य स्थान को बदलकर एक पत्रकार की कार्य संतुष्टि को अच्छा किया जा सकता है एवं सबसे कम प्रतिशत पत्रकार यह मानते है की कार्य स्थान को बदलकर एक पत्रकार की कार्य संतुष्टि को अच्छा नही किया जा सकता है।

शोध परिणाम एवं निष्कर्ष

शोध से यह परिणाम निकलता है की 80 प्रतिशत पत्रकार अपने वैतन से संतुष्ट है। 20 प्रतिशत पत्रकार अपने वैतन से संतुष्ट नहीं है। उपरोक्त आंकडों से यह निष्कर्ष निकलता है की सबसे ज्यादा प्रतिशत पत्रकार अपने वैतन से संतुष्ट है एवं सबसे कम प्रतिशत पत्रकार अपने वैतन से संतुष्ट नहीं है। प्रस्तुत अध्ययन से यह परिणाम निकलता है की 71.66 प्रतिशत पत्रकारों का कहना है की नौकरी के दौरान समाचार संगठन का दबाव रहता है। पत्रकारों पर सामाजिक दबाव का प्रतिशत शुन्य है। 25 प्रतिशत पत्रकारों का कहना है की उन पर नौकरी के दौरान राजनेतिक दबाव रहता है। 3.34 प्रतिशत पत्रकारों का यह कहना है की नौकरी के दौरान उन्हे आर्थिक दबाव का सामना करना पडता है। पत्रकारों पर अन्य प्रकार के दबावों का प्रतिशत शुन्य है। उपरोक्त आंकडों से यह निष्कर्ष निकलता है की सबसे ज्यादा प्रतिशत पत्रकारों पर समाचार संगठन का दबाव रहता है एवं सबसे कम प्रतिशत पत्रकारों पर नोकरी के दौरान आर्थिक दबाव रहता है। शोध से यह परिणाम निकलता है की 80 प्रतिशत पत्रकारों का यह मानना है की उन्हे समाचार पत्र छपने के बाद समिक्षा के दौरान समाचार छूटने पर दबाव अधिक महसूस होता है। 6.66 प्रतिशत पत्रकारों का यह कहना है की उन्हे समाचार पत्र छपने के बाद समिक्षा के दौरान समाचार छूटने पर दबाव बहुत अधिक महसूस होता है। 13.34 प्रतिशत पत्रकारों का

यह कहना है की उन्हे समाचार पत्र छपने के बाद समिक्षा के दौरान समाचार छूटने पर दबाव कम महसूस होता है। शुन्य प्रतिशत पत्रकारों का यह कहना है की उन्हे समाचार पत्र छपने के बाद समिक्षा के दौरान समाचार छूटने पर दबाव बहुत कम महसूस होता है। शुन्य प्रतिशत पत्रकारों का यह कहना है की उन्हे समाचार पत्र छपने के बाद समिक्षा के दौरान समाचार छूटने पर दबाव बिल्कुल भी महसूस नहीं होता है। प्रस्तुत अध्ययन से यह परिणाम निकलता है की 71.66 प्रतिशत पत्रकार यह मानते है की उच्च प्रबन्धकों द्वारा सहयोग देकर एक पत्रकार की कार्य संतुष्टि को अच्छा किया जा सकता है। 6.66 प्रतिशत पत्रकार यह मानते है की उच्च प्रबन्धकों द्वारा सहयोग देकर एक पत्रकार की कार्य संतुष्टि को अच्छा नही किया जा सकता है। 21.68 प्रतिशत पत्रकारों का इस विषय पर कोई जवाब नहीं है। उपरोक्त आंकडों से यह निष्कर्ष निकलता है की सबसे ज्यादा प्रतिशत पत्रकारों का यह मानना है की उच्च प्रबन्धकों द्वारा सहयोग देकर एक पत्रकार की कार्य संतुष्टि को अच्छा किया जा सकता है एवं सबसे कम प्रतिशत पत्रकार यह मानते है की उच्च प्रबन्धकों द्वारा सहयोग देकर एक पत्रकार की कार्य संतुष्टि को अच्छा नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत अध्ययन से यह परिणाम निकलता है की 23.33 प्रतिशत पत्रकार यह मानते है की पत्रकारों को उच्च प्रशिक्षण देकर एक पत्रकार की कार्य संतुष्टि को अच्छा किया जा सकता है। 33.33 प्रतिशत पत्रकार यह मानते है की पत्रकारों को उच्च प्रशिक्षण देकर एक पत्रकार की कार्य संतुष्टि को अच्छा नही किया जा सकता है। 43.34 प्रतिशत पत्रकारों का इस विषय पर कोई जवाब नहीं है। उपरोक्त आंकडों से यह निष्कर्ष निकलता है की सबसे ज्यादा प्रतिशत पत्रकारों का यह मानना है की प्रतिशत पत्रकार यह मानते है पत्रकारों को उच्च प्रशिक्षण देकर एक पत्रकार की कार्य संतुष्टि को अच्छा नही किया जा सकता है एवं सबसे कम प्रतिशत पत्रकार यह मानते है की पत्रकारों को उच्च प्रशिक्षण देकर एक पत्रकार की कार्य संतुष्टि को अच्छा किया जा सकता है। शोध से यह परिणाम निकलता है की 58.33 प्रतिशत पत्रकार यह मानते है की कार्य स्थान को बदलकर एक पत्रकार की कार्य संतुष्टि को अच्छा किया जा सकता है। 13.33 प्रतिशत पत्रकार यह मानते है की कार्य स्थान को बदलकर एक पत्रकार की कार्य संतुष्टि को अच्छा नहीं किया जा सकता है। 28.34 प्रतिशत पत्रकारों का इस विषय पर कोई जवाब नहीं है। उपरोक्त आंकडों से यह निष्कर्ष निकलता है की सबसे ज्यादा प्रतिशत पत्रकारों का यह मानना है की कार्य स्थान को बदलकर एक पत्रकार की कार्य संतुष्टि को अच्छा किया जा सकता है एवं सबसे कम प्रतिशत पत्रकार यह मानते है की कार्य स्थान को बदलकर एक पत्रकार की कार्य संतुष्टि को अच्छा नही किया जा सकता है। आंकडों से यह निष्कर्ष निकलता है की सबसे ज्यादा प्रतिशत पत्रकार अपने वैतन से संतुष्ट है एवं सबसे कम प्रतिशत पत्रकार अपने वैतन से संतुष्ट नहीं है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

Beam, R. A. (2006). Organizational Goals and Priorities and the Job Satisfaction of US. Journalists. Journalism & Mass Communication Quarterly, 83, 169-185.

Chassie, B. Marilyn and Rabi.S. Bhagat, 1980, "Role Stress in Working Women: Differential Effect on selected Organizational Outcomes", Group and Organizational Management, 5, 2, pp.224-233.

Chitiris, L. (1988). Herzberg's proposals and their applicability to the hotel industry. Hospitality Education and Research Journal, 12(1), 67-79.

Cook, B. B., & Banks, S. R. (1993). Predictors of Job Burnout in Reporters and Copy Editors. Journalism & Mass Communication Quarterly, 70(1), 108-117.

DeFleur, M. H. (1992). Foundations of Job Satisfaction in the Media Industries. Journalism & Mass Communication Educator, 47(1), 3-15.

Gray, David.E, 1984, "Job Satisfaction among Australian Nurses", Human Relations, Vol.37, 12, pp.1063-1077.

Gupta, K. and Nisha, B., 1978, "A Study of Job Satisfaction Among Secondary School Teachers", Asian Journal of Psychology and Education, Vol.4 (1), pp.25-30.

Kakkar, Ved, 1983, "A Study of Job Satisfaction Relation to Attitudes, Job Values and Vocational Interests of Women", Ph.D. Edu. Bhopal Uni.

Smart, J.C. and Ethington, C.A., 1987, "Occupational Sex Segregation and Job Satisfaction of Women", Research in Higher Education, 26, 2, pp. 202-211.